अङ्गविज्जा (फोल्डर नं. ००१४३९)

मुख्य टाइटल

समर्पण

ग्रन्थानुक्रम

Foreword ---------- vii

द्वितीयमुद्रणके अवसर पर – निवेदन---------viii

मुनि पुण्यविजयजी का किंचित् परिचय – ले. लक्ष्मणभाई भोजक---------ix-x

१. श्री पुण्यविजयजी के संपादित ग्रन्थों की सूचि---------xi

२. Preface (प्राक्कथन)---------xii-xuv

३. प्रस्तावना (मुनि श्री पुण्यविजयजी) ---------१-१४

४. विषयानुक्रम---------१५-२८

५. Introduction (Dr. Moti Chandra)---------२९-४५

६. अंगविज्जा (हिन्दी भूमिका-श्री वासुदेवशरण अग्रवाल) ---------४६-७८

७. हस्तलिखित प्रतियों के फोटोचित्र---------७९-८०

८. अंगविज्जा पइण्णयं-मूलग्रन्थ---------१-२६९

१-३६ पद्य – १ पहला अंगोत्पत्ति अध्याय ---------१-३

१-९ पद्य – अंगविद्या की उत्पत्ति ---------१

१०-२० पद्य – अंगविद्या का स्वरूप---------१-२

२१-३६ पद्य – अंगविद्या प्रकीर्णक ग्रन्थ के अध्यायों के नाम ---------२-३

२ दूसरा निजसंस्तव अध्याय ---------३

१-५४ पद्य – ३ तीसरा शिष्योपख्यापन अध्याय – अंगविद्याशआस्त्र को...---------३-५

४ चौथा अंगस्तव अध्याय – अंगविद्या का माहात्म्य---------५-६

५ पाँचवाँ मणिस्तव अध्याय – अंगविद्या के पारंगत मणिस्वरूप...---------६

६ छट्ठा आधारण अध्याय – अंगविद्याशास्त्रज्ञ गंभीर होकर....---------७

७ सातवाँ व्याकरणोपदेश अध्याय – अंगविद्याशास्त्र गंभीर होकर... ---------७

८ आठवाँ भूमीकर्म अध्याय---------८-५६

(१) गद्यबंध संग्रहणीपटल... ---------८-९

१-१८ पद्य (२) पद्यबंध संग्रहणी पटल...---------९-१०

१-२८ पद्य (३) भूमीकर्म सत्त्वसमुद्देश पटल...---------१०-११

१-४८ पद्य (४) आत्मभावपरीक्षा पटल...---------११-१३

१-११ पद्य (५) निमित्तोफधारणा पटल ---------१३

१-१२६ पद्य (६) आसनाध्याय पटल---------१३-१८

१-४० पद्य – बत्तीस प्रकार के आसन...---------१३-१५

४१-१२६ पद्य – बैठने के प्रकारान्तर, बैठने की दिशा... ---------१५-१८

१-९४ पद्य – (७) पर्यस्तिका पटल... ---------१८-२१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१-१६२ पद्य – (८) आमासगंडिका पटल... ---------- २१-२६
१-१५८ पद्य – (९) अपश्रय पटल..... ---------- २६-३१
१-६० पद्य – (१०) स्थित पटल... ---------- ३१-३३
१-३१ पद्य - (११) प्रेक्षितविभाषा पटल... ---------- ३४-३५
१-३० पद्य – (१२) हसितविभाषा पटल... ---------- ३५-३६
१-७५ पद्य (१३) पृष्ट पटल... ---------- ३६-३८
१-३३ पद्य (१४) वंदितविभाषा पटल... ---------- ३८-३९
१-३७ पद्य – (१५) संलापविधि पटल.... ---------- ४०-४१
१-३६ पद्य – (१६) आगतविभाषा पटल... ---------- ४१-४२
१-२६ पद्य – (१७) रुदतविभाषा पटल... ---------- ४२-४३
१-९ पद्य – (१८) परिदेवितविभाषा पटल...
१-७ पद्य – (१९) विक्रंदित पटल... ---------- ४४
१-३७ पद्य – (२०) पतितविभाषा पटल... ---------- ४४-४५
१-२१ पद्य (२१) आत्मोत्थितविभाषा पटल... ---------- ४५-४६
१-८ पद्य (२२) निर्गत पटल... ---------- ४६
१-९ पद्य (२३) प्रचलायितविभाषा पटल... ---------- ४६-४७
१-१८ पद्य (२४) जृम्भितविभाषा पटल... ---------- ४७
१-७ पद्य (२५) जल्पितविभाषा पटल... ---------- ४७-४८
१-४२ पद्य (२६) चुंबितविभाषा पटल... ---------- ४८-४९
१-६७ पद्य (२७) आलिंगित पटल... ---------- ४९-५१
१-४२ पद्य (२९) सेवितविभाषा पटल... ---------- ५१-५३
१-७९ पद्य (२९) सेवितविभाषा पटल... ---------- ५३-५६
१-१६ पद्य (३०) भूमीकर्मसत्त्वगुणविभाषा पटल... ---------- ५६
१-१८६८ ९ नववाँ अंगमणी अध्याय ---------- ५७-१२९
मणिसूत्र – अंगमणि अध्याय में वर्णनीय २७० द्वारों का निर्देश ---------- ५७-५९
१-१९२ पद्य (१) पिचत्तर पुण्णाम... ---------- ५९-६६
१९३-३७४ पद्य (२) पिचहत्तर स्त्रीनाम... ---------- ६६-७२
३७५-४०५ पद्य (३) अट्ठावन नपुंसक नाम... ---------- ७२-७३
४०६-४४१ पद्य (४) सतरह दक्षिण... ---------- ७३-७४
४४२-७४९ पद्य (५) सतरह वाम... ---------- ७५-७६
४८०-५२१ पद्य – (६) सतरह मध्यम... ---------- ७६-७६
४२२-५६४ पद्य (७) अट्ठाईस दृढ... ---------- ७७-७९
५६५-६१६ पद्य (८) अट्ठाइस चल... ---------- ७९-८०
६१७-६५६ पद्य (९) सोलह अतिवृत्त ---------- ८१-८२
६५७-६९६ पद्य (१०) सोलह वर्त्तमान ---------- ८२-८३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

६९६-७३४ पद्य (११) सोलह अनागत...---८३-८४
७३५-७७१ पद्य (१२) पचास अभ्यन्तर...---८४-८६
७७२-८०६ पद्य (१३) पचास अभ्यन्तराभ्यन्तर...---८६-८७
८०७-८३६ पद्य (१४) पचास बाहिराभ्यन्तर...---८७-८८
८३७-८५६ पद्य (१५) पचास अभ्यन्तर बाहिर...---८८
८५७-८७६ पद्य (१६) पचास बाहिर...---८९
८७७-८९९ पद्य (१७) पचास बाहिर बाहिर...---८९-९०
९००-९१६ पद्य (१८) पचास ओवात-अवदात...---९०-९१
९१७-९१२ पद्य (१९) पचास सामोवात-श्यामावदात...---९१
९३३-९४६ पद्य (२०) पचास श्याम...---९१-९२
९४७-९६५ पद्य (२१-२२) पचास श्यामकृष्ण और कृष्ण...---९२
(२३-२४) पचास अध्यवदात और अतिकृष्ण---९२
९६६-९९६ पद्य (२५) बीस उत्तम...---९३
९९७-१०१० पद्य (२६) चौदह मध्यम...---९४
१०११-१०१४ पद्य (२७) चौदह मध्यमानन्तर...---९४
१०१५-१०३७ पद्य (२८) दस जघन्य...---९४-९५
१०३८-१०५४ पद्य (२९) दो उत्तम मध्यम साधारण---९५-९६
१०५५-१०५८ पद्य (३०) दो मध्यम मध्यम साधार...---९६
१०५९-१०६६ पद्य (३१) दो मध्यमानन्तर मध्यम साधारण---९६
१०६७-१०७२ पद्य (३२) दो मध्यमानन्तर जघन्य साधारण---९६
१०७३-१०९५ पद्य (३३) दस बालेय...---९७
१०९६-११२७ पद्य (३४) चौदह यौवनस्थ...---९७-९८
११२७-११४८ पद्य (३५) चौदह मध्यमवयस्क...---९९
११४९-११७४ पद्य (३६) बीस मावयस्क...---९९-१००
११७५-११८० पद्य (३७-३९) वयः साधारण...---१००
११८१-११९३ पद्य (४०) बीस ब्रह्मेय...---१०१
११९४-११९९ पद्य (४१) चौदह क्षत्रेय...---१०१
१२००-१२०५ पद्य (४२) चौदह वैश्येय---१०१-१०२
१२०६-१२११ पद्य (४३) दस शूद्रेय...---१०२
१२१२-१२४१ पद्य (४४-४६) चतुर्वर्णविधान...---१०२-१०४
१२४२-१२४५ पद्य (४७-५३) आयुःप्रमाणनिर्देश पटल...---१०४
१२४६-१२७१ पद्य (५४) बहत्तर शुक्लवर्णप्रतिभोग...---१०४
१२७२-१२७४ पद्य (५५-६२) वर्णप्रतिभोगपटल---१०४
१२७५-१२९७ पद्य (६३-७३) स्थितामासवर्णयोनिपटल...---१०४-१०५
१२९८-१३३० पद्य (७४-७९) स्निग्धरूक्ष पटल---१०५-१०७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१३३१-१३४७ पद्य (८०) दस आहार...----------१०७
१३४८-१३६७ पद्य (८१-८५) नीहारपटल...---------- १०७-१०८
१३६८-१४४८ पद्य (८६-९५) दिक्पटल...---------- १०८-१११
१४४९-१४६८ पद्य (९६-९९) प्रसन्नाप्रसन्नपटल...---------- १११-११२
१४६९-१४९७ पद्य (१००-१०३) वामपटल... ---------- ११२-११३
१४९८-१४९९ पद्य (१०४) ग्यारह शिव...----------११३
१५००-१५०८ पद्य (१०५) ग्यारह स्थूल...---------- ११३-११४
१५०९ पद्य (१०६) नव उपस्थूल अंग----------११४
१५१० पद्य (१०७) पचीस युक्तोपचय अंग----------११४
१५११ पद्य (१०८) बीस अल्पोपचय अंग (१०९) बीस नातिकृश अंग ----------११४
१५१२-१५१८ पद्य (११०) सतरह कृश... ----------११४
१५१९-१५२० पद्य (१११) ग्यारह परंपरकृश...----------११४
१५२१-१५२८ पद्य (११२) छब्बीस दीर्घ... ---------- ११४-११५
१५२९-१५३० पद्य (११३) छब्बीस युक्तप्रमाण दीर्घ अंग----------११५
१५३१ पद्य (११४) सोलह ह्रस्व किंचिद्दीर्घ अंग----------११५
१५३२-१५३७ पद्य (११५) सोलह ह्रस्व...----------११५
१५३८-१५५२ पद्य (११६) दस परिमंडल...---------- ११५-११६
१५५३-१५५७ पद्य (११७) चौदह करणमंडल ----------११६
१५५८-१५६२ पद्य (११८) बीस वृत्त...----------११६
१५६३-१५६८ पद्य (११९) बारह पृथु... ---------- ११६-११७
१५६९-१५७० पद्य (१२०) इकतालीस चतुरस्र अंग ----------११७
१५७१ पद्य (१२१) दो त्र्यस्र अंग----------११७
१५७२-१५७६ पद्य (१२२) पांच काय अंग----------११७
१५७७-१५८२ पद्य (१२३) सत्ताईस तनु और (१२४) इक्कीस परमतनु...----------११७
१५८३-१५८५ पद्य (१२५) दो अणु (१२६) एक परमाणु अंग----------११७
१५८६-१५९० पद्य (१२७) पांच हृदय और समानार्थक----------११८
१५९१-१५९८ पद्य (१२८) पांच ग्रहण... ----------११८
१५९९-१६०० पद्य (१२९) पांच उपग्रहण अंग और एकार्थक----------११८
१६०१-१६०७ पद्य (१३०) छप्पन रमणीय...----------११८
१६०८-१६१२ पद्य (१३१) बारह आकाश अंग और एकार्थक ---------- ११८-११९
१६१३-१६२२ पद्य (१३२) छप्पन दहरचल और (१३३) छप्पन दहरस्थावर... ----------११९
१६२३-१६३० पद्य (१३४) दस ईश्वर (१३५) दस अनीश्वर... ----------११९
१६३१ पद्य (१३६) चौदह ईश्वरभूत अंग----------११९
१६३२-१६४० पद्य (१३७) पचास प्रेष्य (१३८) पचास प्रेष्यभूत---------- ११९-१२०
१६४१-१६५६ पद्य (१३९) छब्बीस प्रिय और (१४०) छब्बीस द्वेष्य ----------१२०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१६५७-१६६२ पद्य (१४१) छब्बीस मध्यस्थ अंग और समानार्थक ---------- १२०-१२१
१६६३-१६६४ पद्य (१४२-१४६) पृथ्वीकायिकादि अंगों के नामों का अतिदेश----------१२१
१६६५-१६६६ पद्य (१४७) बीस जंगम अंगों के नाम ----------१२१
१६६७-१६७० पद्य (१४८) तेत्तीस आतिमूलिक अंगों के नाम----------१२१
१६७१-१६७२ पद्य (१४९) तेत्तीस मज्झविगाढ अंगोंके नाम----------१२१
१६७३-१६७४ पद्य (१५०) तेत्सी अंत अंगोंके नाम----------१२१
१६७५-१६८६ पद्य (१५१) पचास मुदित और (१५२) पचास दीन...---------- १२१-१२२
१६८७-१६९१ पद्य (१५३) बीस तीक्ष्ण अङ्ग और समानार्थक----------१२२
१६९२-१६९५ पद्य (१५४) पिचत्तर उपद्रुत (१५५) पिचत्तर व्यापन्न अङ्ग----------१२२
१६९६-१६९७ पद्य (१५६) दो दुर्गन्ध और (१५७) दो सुगन्ध अङ्ग----------१२२
१६९८-१७०३ पद्य (१५८) नव बुद्धिरमण (१५९) चार अबुद्धइरमण... ----------१२२
१७०४-१७०५ पद्य (१६०) ग्यारह महापरिग्रह (१६१) चार अपरिग्रह अङ्ग----------१२२
१७०६-१७०७ पद्य (१६२) उन्नीस बद्ध और (१६३) सत्ताईस मोक्ष अङ्ग----------१२२
१७०८ पद्य (१६४-१६६) पचास स्वक, परकीय और स्परकीय अङ्ग----------१२३
१७०९-१७१६ पद्य (१६७-१७२) दो श्देय, दो रूपेय, दो गन्धेय...----------१२३
१७१७-१७१९ पद्य (१७३-१७५) चार वातमण, दो सद्दमण और दश वर्णेय अङ्ग----------१२३
१७२०-१७२२ पद्य (१७६) दस अग्नेय अङ्ग ----------१२३
१७२३ पद्य (१७७) दस जण्णेय अङ्ग----------१२३
१७२४ पद्य (१७८-१७९) दो दर्शनीय और अदर्शनीय----------१२३
१७२५ पद्य (१८०) दस थल अङ्ग----------१२३
१७२६-१७२७ पद्य (१८१) बारह निम्न अङ्ग----------१२३
१७२८ पद्य (१८२-१८३) नव गम्भीर और निम्न गम्भीर अङ्ग ----------१२४
१७२९-१७३२ पद्य (१८४-१८९) पन्दरह विषम, चौदह उन्नत... ----------१२४
१७३३-१७३४ पद्य (१९०-१९१) चौरासी पूर्ण और पिचत्तर तुच्छ अङ्ग----------१२४
१७३५-१७७४ पद्य (१९२-२३८) उन्नीस विवर, अविवर आदि अङ्ग... ---------- १२४-१२६
१७७५-१८१४ पद्य (२३९-२७०) पचास एक्ककादि अडअगों के नाम---------- १२६-१२७
१८१५-१८६८ पद्य दो सौ सत्तर द्वारों का समुच्चित फलादेश...---------- १२८-१२९
१० दसवाँ आगमन अध्याय... ---------- १३०-१३५
११ ग्यारहवाँ पृष्ट अध्याय...---------- १३५-१३८
१२ बारहवाँ योनि अध्या.... ---------- १३८-१४०
१३ तेरहवाँ योनिलक्षण व्याकरणाध्याय---------- १४०-१४४
१४ चौदहवाँ लोमद्वाराध्याय---------- १४४-१४५
१५ पनरहवाँ समागमद्वाराध्याय----------१४५
१६ सोलहवाँ प्रजाद्वाराध्याय ----------१४५
१७ सतरहवाँ आरोग्यद्वाराध्याय ----------१४५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१८ अठारहवाँ जीवितद्वाराध्याय ---------- १४५-१४६
१९ उन्सवाँ कर्मद्वाराध्याय ---------- १४६
२० बीसवाँ वृष्टिद्वाराध्याय ---------- १४६
२१ इक्कीसवाँ विजयद्वाराध्याय ---------- १४६
२२ बाईसवाँ प्रशस्ताध्याय... ---------- १४६-१४८
२३ तेईसवाँ अप्रशस्त अध्याय... ---------- १४८-१४९
२४ चौबीसवाँ जातिविजयाध्याय... ---------- १४९
२५ पच्चीसवाँ गोत्राध्याय... ---------- १४९-१५०
२६ छब्बीसवाँ नामाध्याय... ---------- १५०-१५८
२७ सत्ताईसवाँ स्थान अध्याय... ---------- १५९
२८ अट्ठाईसवाँ कर्मयोनि अध्याय... ---------- १६०-१६१
२९ उनतीसवाँ नगरविजयाध्याय ---------- १६१-१६२
३० तीसवाँ आभरणयोनि अध्याय... ---------- १६२-१६३
३१ इकतीसवाँ वस्त्रयोनि अध्याय... ---------- १६३-१६४
३२ बत्तीसवाँ धान्ययोनि अध्याय... ---------- १६४-१६५
३३ तेत्तीसवाँ यानयोनि अध्याय... ---------- १६५-१६६
३४ चौंतीसवाँ संलापयोनि अध्याय ---------- १६७-१६८
३५ पैंतीसवाँ प्रजाविशुद्धि अध्याय... ---------- १६८
३६ छत्तीसवाँ दोहद अध्याय... ---------- १७०-१७२
३७ सैंतीसवाँ लक्षण अध्याय... ---------- १७३-१७४
३८ अड़तीसवाँ व्यंजनाध्याय... ---------- १७४-१७५
३९ उणचालीसवाँ कन्यावासनाध्याय ---------- १७५-१७६
४० चालीसवाँ भोजनाध्याय... ---------- १७६-१८२
४१ इकतालीसवाँ वरियगंडिकाध्याय... ---------- १८२-१८६
४२ बयालीसवाँ स्वप्नाध्याय ---------- १८६-१९१
४३ तेंतालीसवाँ प्रवासाध्याय ---------- १९१-१९२
४४ चौवालीसवाँ प्रवास अद्धाकालाध्याय ---------- १९२-१९३
४५ पैंतालीसवाँ प्रवेश अध्याय... ---------- १९३-१९४
४६ छियालीसवाँ प्रवेशनाध्याय... ---------- १९५-१९७
४७ सैंतालीसवाँ यात्राध्याय ---------- १९८-१९९
४८ अड़तालीसवाँ जयाध्याय ---------- १९९-२०१
४९ उनचासवाँ पराजयाध्याय ---------- २०१-२०२
५० पचासवाँ उपद्रुताध्याय... ---------- २०२-२०४
५१ इक्कावनवाँ देवताविजयाध्याय ---------- २०४-२०६
५२ बावनवाँ नक्षत्रविजयाध्याय... ---------- २०६-२०९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५३ त्रेपनवाँ उत्पाताध्याय---------- २१०-२११
५४ चौपनवाँ सारासार अध्याय---------- २११-२१३
५५ पचपनवाँ निधान अध्याय... ---------- २१३-२१४
५६ छप्पनवाँ निर्विसूत्राध्याय---------- २१४-२१६
५७ सत्तावनवाँ नष्टकोशकाध्याय...---------- २१६-२२१
५८ अट्ठावनवाँ चिंतिताध्याय... ---------- २२३-२३४
५९ उनसठवाँ कालाध्याय... ---------- २३५-२६२
सत्ताईस पटलों में विभागों में कालाध्यायका कालविषयक...---------- २३७-२३८
छट्ठे और सातवें पटल में पशु-पक्षी एवं वृक्षादिके नाम हैं ----------२३८
सतरहवें पटल में भोज्यपदार्थों के नाम हैं----------२४६
अठारहवें पटल में भक्तवेला, मागधवेला... ----------२४७
बाईसवाँ अर्धप्रमाण पटल---------- २५०-२५३
चौबीसवाँ वर्षावास-वृष्टिपटल ---------- २५४-२५७
६० साठवाँ पूर्वमेवविपाकाध्याय-पूर्वार्ध---------- २६२-२६३
६० साठवाँ उपपत्तिविजयाध्याय-उत्तरार्ध... ---------- २६४-२६९
परिशिष्टानि
प्रथम परिशिष्ट-सटीकम् अंगविद्याशास्त्रम् ---------- २६९-२७८
द्वितीय परिशिष्ट-अंगविज्जा-शब्दकोष---------- २७९-३२२
तृतीय परिशिष्ट-अंगविज्जान्तर्गतप्राकृतधातुप्रयोगाणां संग्रहः ---------- ३२३-३३२
चतुर्थ परिशिष्ट
(१) अंगविज्जानवमाध्ययमध्यगतानामङ्गनाम्नां कोषः ---------- ३३३-३३५
(२) अंगविज्जानवमाध्यायप्रारम्भे निर्दिष्टानां २७० अङ्गविभाजकद्वाराणां संग्रहः---------- ३३६-३३८
(३) अंगविज्जानवमाध्याये विभागशो निर्दिष्टानामङ्गनाम्नां यथाविभागं संग्रहः---------- ३३८-३४५
पञ्चमपरिशिष्ट-अंगविज्जामध्यगतानां विशिष्टवस्तुनाम्नां विभागशः संग्रहः ---------- ३४६-३६५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org